भी अलग-अलग होती है।

एफएम रेडियो.

यह एक प्रकार का रेडियो प्रसारण ही है, जिसमें केरियर की आवृत्ति को प्रसारण ध्वनि के अनुसार माड्यूलेट किया जाता है। इस प्रक्रिया को आवृत्ति माड्यूलेशन या आवृत्ति माड्यूलन कहते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा माड्यूलन कर जब रेडियो प्रसारण होता है, उसे एफएम प्रसारण कहते हैं। इस वाहक का आयाम स्थिर बना रहता है और गुणवत्ता अधिक होती है। इसी कारण आजकल एफएम के प्रसारण लोकप्रिय हो रहे हैं। आज रेडियो सुनना इतना आसान और सुलभ हो गया है कि मोबाइल सेट में भी आप रेडियो सुन सकते हैं। जिस प्रकार रेडियो के हार्डवेअर में परिवर्तन हुए हैं उसी प्रकार साफ्टवेअर में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। रेडियो और अधिक जन-उपयोगी होता जा रहा है। इसके कारण रेडियो की स्वीकार्यता और मांग दोनों बढ़ गई है। कई चैनलों की भरमार हो गई है और इसी के अनुरुप केन्द्रों की संख्या में असाधारण वृद्धि हुई है। इनकी बढ़ती उपयोगिता के चलते ही सामुदायिक रेडियो, सेटेलाइट रेडियो, डिजिटल रेडियो तथा इंटरनेट रेडियो आदि प्रचलन में आए।

भारत की आबादी के लगभग चालीस प्रतिशत के पास ही इंटरनेट की सुविधा है। लेकिन वह हर जगह सही काम नहीं कर पाता। फिर गाँवों और कस्बों में बिजली की समस्या है। लेकिन बैटरी से चलने वाला ट्रांजिस्टर रेडियो हर जगह और हर वक्त चल सकता है। दूरदर्शन के डीडी भारती चैनल को छोड़कर किसी अन्य टीव्ही चैनल पर संगीत, विज्ञान, कृषि या साहित्य से जुड़ा कोई भी कार्यक्रम प्रसारित नहीं किया जाता। इसलिए हर संगीत प्रेमी के लिए और विविध जानकारी प्राप्त करने के लिए आकाशवाणी से बेहतर और कोई सेवा हो ही नहीं सकती है।

सबसे आसान, सबसे विश्वसनीय और कम खर्चे पर सुना जाने वाला संचार का अगर कोई माध्यम है तो वह रेडियो ही है, जहां श्रोताओं का बहुत बड़ा वर्ग इससे जुड़ा हुआ है।

कुछ स्मरणीय बातें

आकाशवाणी की लोकप्रियता को चार चांद लगाने में साहित्यकारों का भी बड़ा योगदान रहा है। स्व. भगवती चरण वर्मा, पंडित प्रेम बरेलवी, रघुवीर सहाय, रमई काका, अमृतलाल नागर, भवानी प्रसाद मिश्र, जगदीश चन्द्र माथुर, बालकृष्ण राव, भारतभूषण अग्रवाल, विष्णु प्रभाकर, सुमित्रा नन्दन पंत, कमलेश्वर, आदि के नामों को कैसे विस्मृत किया जा सकता हैए

विविध भारती के आगाज के वक्त सबसे पहले नाच रे मयूरा खोल कर सहस्र नयन, देख सघन गगन-मगन, देख सरस स्वप्न जो कि आज हुआ पूरा गाना सबसे पहले बजाया गया था। इसे इस अवसर के लिए विशेष रूप से पंडित नरेंद्र शर्मा ने लिखा था और अनिल विश्वास के संगीत निर्देशन में मन्ना डे ने गाया था।

एक मनोरंजन रेडियो चैनल के रूप में विविध भारती ने न केवल मुस्तैदी से अपनी भूमिका निभाई, बल्कि साहित्य, शास्त्रीय संगीत, नाटक, सिनेमा और फिल्म संगीत से जुड़ी तमाम महत्वपूर्ण बातों का दस्तावेजीकरण भी किया गया है।सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, हरिवंश राय बच्चन जी से लेकर आज के जमाने के कवियों तक। उर्दू अदब में अली सरदार जाफरी, इस्मत चुगताई से लेकर शहरयार तक, शास्त्रीय संगीत में पंडित डीवी पलुस्कर और भीमसेन जोशी से लेकर आज के महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों तक। इसी तरह सिनेमा में अशोक कुमार और लीला नायडू से लेकर शाहिद कपूर और प्रियंका चोपड़ा तक सभी नामी हस्तियों की आवाजें विविध भारती के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।संगीत के दीवानों को विविध भारती पर ही नौशाद से लेकर ओपी नैयर, शंकर जयकिशन, सी रामचंद्र, रोशन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल, कल्याणजी-आनंदजी, इतने नाम हैं जिन्हें गिनाते-गिनाते थक जाएं।

इन सभी के साक्षात्कार विविध भारती से ही सुनने को मिले हैं। कौन से गाने कैसे बने, रिकॉर्डिंग के समय कौन-कौन सी घटनाएं हुईं। कौन से राग पर बने, शूटिंग के दौरान का किस्सा क्या है, समझ लीजिए कि विविध भारती ने आधी सदी से ज्यादा वक्त में बड़ी लगन के साथ एक ध्वनि-महाग्रंथ तैयार किया है

रेडियो जगत के लिए यह गौरव का विषय था जब युनेस्को ने अपनी 36 वीं महासभा में, रेडियो कैसे हमारे जीवन को एक नया आयाम देने में मददगार हो सकता है इस परिकल्पना के साथ वर्ष 2011 में 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। पहली बार विश्व रेडियो दिवस आधिकारिक रूप में वर्ष 2012 में मनाया गया। 13 फरवरी युनेस्को के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्ष 1946 में संयुक्त राष्ट्र के पहले रेडियो स्टेशन की स्थापना का दिन भी यही था। तब से युनेस्को प्रतिवर्ष संगठनों और समुदायों के साथ मिलकर विभिन्न गतिविधियों द्वारा विश्व रेडियो दिवस मनाता है। रेडियो दिवस पर एक विषय का निर्धारण होता हैए। इस वर्ष रेडियो और खेल विषय के अन्तर्गत आयोजन किए जायेंगे। इसमें पारंपरिक और जमीनी स्तर पर खेलों की विविधता बढ़ाने और खेलों से लोगों को जोड़ना जैसे उद्देश्य शामिल हैं, साथ ही खेलों के माध्यम से विश्व-शांति और विकास के पहलुओं पर फोकस करना भी इस विषय का उद्देश्य है।

हम इस बात को गर्व के साथ कह सकते हैं कि रेडियो शुरु से ही जीवन के अनेकानेक क्षेत्रों में हमारे लिए उपयोगी और लाभकारी रहा है तथा सभ्यता-संस्कृति तथा ज्ञान-विज्ञान और कलाओं के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हुए समाज के लिए वरदान साबित हुआ है। ■